Kaun Si Dunya Buri Hai (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 253
Weekly Booklet : 253

अमीरे अहले सुन्नत دامت برکاتہم العالیہ की किताब "नेकी की दा'वत" की
एक क़िस्त मअ़ तरमीम व इज़ाफ़ा बनाम

कौन सी दुन्या बुरी है ?

सफ़हात 18

इस्लाम की इ़ज़्ज़त दिलों से निकलने का सबब 01
इब्लीस की बेटी 06
दुन्या के तीन बेहतरीन काम 08
दो मछलियां पकड़ने वालों की हिकायत 12

शैख़े तरीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, हज़रते अल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुहम्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

नामे रिसाला : **कौन सी दुन्या बुरी है ?**
सिने त़बाअ़त : **1443** हि., **2022** ई.
ता'दाद : 000

नाशिर : **मक्तबतुल मदीना**

मदनी इल्तिजा : किसी और को येह रिसाला छापने की इजाज़त नहीं है ।

कौन सी दुन्या बुरी है ?

येह रिसाला (**कौन सी दुन्या बुरी है ?**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है। इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई मेल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दा'वते इस्लामी)

मक्तबतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 98987 32611 • Email :hind.printing92@gmail.com

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इ़ल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इ़ल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इ़ल्म पर अ़मल न किया)। (تاریخ دمشق لابن عساکر ج ۵۱ ص ۱۳۸ دارالفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक्तबतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

येह मज़्मून "नेकी की दा'वत" सफ़ह़ा 259 ता 271 से लिया गया है।

कौन सी दुन्या बुरी है ?

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 16 सफ़ह़ात का रिसाला : **"कौन सी दुन्या बुरी है"** पढ़ या सुन ले उस के दिल से दुन्या की मह़ब्बत दूर फ़रमा कर उसे अपनी और अपने प्यारे प्यारे सब से आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत इनायत फ़रमा और उस को बे ह़िसाब बख़्श दे। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : क़ियामत के रोज़ लोगों में मेरे नज़दीक तर वोह होगा जिस ने मुझ पर ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे। (ترمذی، 2/27، حدیث:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

इस्लाम की हैबत दिलों से निकलने का सबब

अफ़्सोस ! आज उम्मत की अक्सरिय्यत दुन्या को बहुत ज़ियादा अहम्मिय्यत देने के सबब इस्लाम की ह़क़ीक़ी मह़ब्बत से मह़रूम होती जा रही है, इस के भयानक नताइज के ज़िम्न में एक ह़दीसे पाक मुलाह़ज़ा हो चुनान्चे ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه से मरवी है कि **अल्लाह** पाक के सच्चे नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब मेरी उम्मत **दुन्या** को बड़ी चीज़ समझने लगेगी तो इस्लाम की हैबत उस से निकल

जाएगी और जब नेकी का हुक्म देना और बुराई से मन्अ़ करना छोड़ देगी तो वह़ी की बरकत से मह़रूम हो जाएगी और जब आपस में गाली गलोच इख़्तियार करेगी तो **अल्लाह** पाक के हां मक़ामे इ़ज़्ज़त से गिर जाएगी।

(نوادرالاصول، 1/679، حدیث:933)

दुन्या की मह़ब्बत से दिल पाक मेरा कर दो बुलवा के शहनशाहे अबरार मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 198)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्या के बारे में ख़ुसूसी मा'लूमात पर मब्नी मदनी फूल

दुन्या खेलकूद है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस रिवायत में बयान किया गया है कि जब उम्मत दुन्या को ख़ूब अहम्मिय्यत देने लगेगी तो इस्लाम की हैबत उस से निकल जाएगी। वाक़ेई दुन्या को "बड़ी चीज़" समझना बहुत बुरा है। सवाबे आख़िरत कमाने की निय्यत से दुन्या के बारे में ख़ुसूसी मा'लूमात पर मब्नी कुछ मदनी फूल पेश करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं, दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, "कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान" सफ़ह़ा 252 पर पारह 7 **सूरतुल अन्आ़म** आयत नम्बर 32 में फ़रमाने रब्बुल अनाम है : ﴿وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّ لَهْوٌ ؕ وَ لَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝۳۲﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और दुन्या की ज़िन्दगी नहीं मगर खेलकूद और बेशक पिछला घर भला उन के लिये जो डरते हैं तो क्या तुम्हें समझ नहीं।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान में इस आयते मुबारका के तह़्त फ़रमाते हैं : नेकियां और त़ाअ़तें (या'नी इ़बादतें) अगर्चे मुअमिनीन से दुन्या ही में वाक़ेअ़ हों लेकिन वोह उमूरे आख़िरत में से हैं। इस से साबित हुवा कि आ'माले मुत्तक़ीन (या'नी नेक बन्दों के आ'माल) के सिवा दुन्या में जो कुछ है सब लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद) है।

दुन्या के ग़मों की तुम लिल्लाह दवा दे दो बुलवा के ग़म अपना दो सरकार मदीने में

(वसाइले बख़्शिश, स. 196)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्या का मा'ना

दा'वते इस्लामी के मक्तबतुल मदीना की किताब "इस्लाहे़ आ'माल" जिल्द अव्वल (868 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 128 ता 129 पर है :

दुन्या का लुग़वी मा'ना है : "क़रीब" और दुन्या को दुन्या इस लिये कहते हैं कि येह आख़िरत की निस्बत इन्सान के ज़ियादा क़रीब है या इस वज्ह से कि येह अपनी ख़्वाहिशात व लज़्ज़ात के सबब दिल के ज़ियादा क़रीब है। (حدیقۃ الندیہ، 17/1)

दुन्या क्या है ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बुख़ारी शरीफ़ की शर्ह़ "उ़म्दतुल क़ारी" जिल्द 1 सफ़ह़ा 52 पर लिखते हैं : "दारे आख़िरत से पहले तमाम मख़्लूक़ दुन्या है।" (عمدۃ القاری، 52/1) पस इस ए'तिबार से

सोना चांदी और इन से ख़रीदी जाने वाली तमाम ज़रूरी व ग़ैर ज़रूरी अश्या दुन्या में दाख़िल हैं। (حدیقۃ الندیہ، 1/17)

कौन सी दुन्या अच्छी कौन सी क़ाबिले मज़म्मत ?

दुन्यावी अश्या की तीन क़िस्में हैं : ﴿1﴾ वोह दुन्यावी अश्या जो आख़िरत में साथ देती हैं और उन का नफ़्अ़ मौत के बा'द भी मिलता है, ऐसी चीज़ें सिर्फ़ दो हैं : इल्म और अ़मल, अ़मल से मुराद है, इख़्लास के साथ **अल्लाह** पाक की इबादत करना और दुन्या की येह क़िस्म महमूद (या'नी बहुत उ़म्दा) है ﴿2﴾ वोह चीज़ें जिन का फ़ाएदा सिर्फ़ दुन्या तक ही महदूद रहता है आख़िरत में उन का कोई फल नहीं मिलता जैसे गुनाहों से लज़्ज़त हासिल करना, जाइज़ चीज़ों से ज़रूरत से ज़ियादा फ़ाएदा उठाना मसलन ज़मीन, जाएदाद, सोना चांदी, उ़म्दा कपड़े और अच्छे अच्छे खाने खाना और येह दुन्या की मज़्मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत) क़िस्म में शामिल हैं ﴿3﴾ वोह अश्या जो नेकियों पर मददगार हों जैसे ज़रूरी ग़िज़ा, कपड़े वग़ैरा। येह क़िस्म भी महमूद (अच्छी) है लेकिन अगर महज़ दुन्या का फ़ौरी फ़ाएदा और लज़्ज़त मक़्सूद हो तो अब येह दुन्या मज़्मूम (क़ाबिले मज़म्मत) कहलाएगी। (احیاء العلوم، 3/270-271)

दुन्या के नज़ारों से भला क्या हो सरोकार उ़श्शाक़ को बस इ़श्क़ है गुलज़ारे नबी से

(वसाइले बख़्शिश, स. 202)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्या का कौन सा काम अल्लाह पाक के लिये है और कौन सा नहीं ?

दुन्यावी कामों की तीन अक़्साम हैं : ﴿1﴾ बा'ज़ काम वोह हैं जिन के बारे

में येह तसव्वुर भी नहीं किया जा सकता कि येह **अल्लाह** पाक के लिये किये गए हैं मसलन ना जाइज़ व ह़राम काम ﴿2﴾ बा'ज़ वोह हैं जो **अल्लाह** पाक के लिये भी हो सकते हैं और उस के ग़ैर के लिये भी मसलन ग़ौरो तफ़क्कुर करना और ख़्वाहिशात से रुकना क्यूं कि अगर लोगों में अपनी मक़्बूलिय्यत बढ़ाने के लिये और बुज़ुर्गी के ह़ुसूल की ख़ातिर ग़ौरो फ़िक्र किया या ख़्वाहिशात को सिर्फ़ इस लिये छोड़ा कि माल की बचत हो या सिह़्ह़त अच्छी रहे तो अब येह काम रिज़ाए इलाही के लिये न होंगे ﴿3﴾ बा'ज़ काम वोह हैं जो ब ज़ाहिर नफ़्स के लिये हों मगर ह़क़ीक़त में **अल्लाह** पाक की रिज़ा की निय्यत से किये गए हों जैसे ग़िज़ा खाना, निकाह़ करना वग़ैरा। (احیاء العلوم، 3/273)

ताजे शाही उस के आगे हेच है मुस्त़फ़ा की जिस को उल्फ़त मिल गई

(वसाइले बख़्शिश, स. 209)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्यादार की ता'रीफ़

जब बन्दा आख़िरत की बेहतरी की ग़रज़ से दुन्या में से कुछ लेगा तो उसे दुन्यादार नहीं कहेंगे बल्कि उस के ह़क़ में दुन्या आख़िरत की खेती होगी और अगर ज़ाती ख़्वाहिश और ह़ुसूले लज़्ज़त के त़ौर पर येह चीज़ें ह़ासिल करता है तो वोह दुन्यादार है। (احیاء العلوم، 3/272)

दुन्यावी अश्या की लज़्ज़तों की ह़ैरत अंगेज़ ह़क़ीक़त

दुन्या में ह़क़ीक़ी लज़्ज़त किसी शै में नहीं, अलबत्ता लोग तकालीफ़ का ख़ातिमा करने वाली चीज़ों को लज़्ज़त का नाम देते हैं मसलन खाने में इस लिये लज़्ज़त है कि वोह भूक की तक्लीफ़ को ख़त्म करता है येही

वज्ह है कि जब भूक ख़त्म हो जाए तो खाने में लज़्ज़त महसूस नहीं होती। इसी त़रह़ पानी इस लिये लज़ीज़ लगता है कि प्यास को ख़त्म करता है, जब प्यास बुझ गई तो लज़्ज़त भी जाती रही। ह़क़ीक़ी लज़्ज़तें तो जन्नत में नसीब होंगी क्यूं कि अहले जन्नत को जब कोई तक्लीफ़ ही न होगी तो इस से छुटकारा देने वाली अश्या का वुजूद कहां से होगा ? लिहाज़ा उन की लज़्ज़ात ह़क़ीक़ी होंगी मसलन उन के खाने पीने की लज़्ज़तें अस्ली होंगी, मह़ज़ भूक और प्यास ख़त्म करने के लिये न होंगी। (حدیقۃ الندیہ، 1/19 ملخصا)

इब्लीस की बेटी

ह़ज़रते अ़ली ख़व्वास رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : दुन्या इब्लीसे लईन (या'नी ला'नती शैत़ान) की बेटी है और इस (या'नी दुन्या) से मह़ब्बत करने वाला हर शख़्स उस की बेटी का ख़ावन्द है, इब्लीस अपनी बेटी की वज्ह से उस दुन्यादार शख़्स के पास आता जाता रहता है, लिहाज़ा मेरे भाई ! अगर तुम शैत़ान से मह़फ़ूज़ रहना चाहते हो तो उस की बेटी (या'नी दुन्या) से रिश्ता क़ाइम न करो। (حدیقۃ الندیہ، 1/19)

नीली आंखों वाली बद सूरत बुढ़िया

ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इ़याज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं, ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا ने फ़रमाया : बरोज़े क़ियामत एक नीली आंखों वाली निहायत बद सूरत बुढ़िया जिस के दांत आगे की त़रफ़ निकले होंगे लोगों के सामने ज़ाहिर होगी और उन से पूछा जाएगा : इस को जानते हो ? लोग कहेंगे : हम इस की पहचान से **अल्लाह** पाक की पनाह चाहते हैं। कहा जाएगा : येह वोही दुन्या है जिस पर तुम फ़ख़्र किया करते थे, इसी की वज्ह से क़त़्अ़ रेह़्मी करते या'नी रिश्तेदारियां काटते थे, इसी के सबब

एक दूसरे से ह़सद और दुश्मनी करते थे। फिर उस (बुढ़िया नुमा दुन्या) को जहन्नम में डाला जाएगा तो पुकारेगी : ऐ मेरे परवर दगार ! मेरी पैरवी करने वाले और मेरी जमाअ़त कहां है ? **अल्लाह** फ़रमाएगा : उन को भी इस के साथ कर दो। (ذم الدنیا مع موسوعۃ الامام ابن ابی الدنیا، 5/72، رقم:123)

दौलते दुन्या से बे रग़बत मुझे कर दीजिये मेरी ह़ाजत से मुझे ज़ाइद न करना मालदार

(वसाइले बख़्शिश, स. 398)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्या मीठी सर सब्ज़ है

रसूले अकरम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : दुन्या मीठी सर सब्ज़ है, जो इस में ह़लाल त़रीक़े से माल कमाता है और सह़ीह़ हुक़ूक़ में ख़र्च करता है **अल्लाह** पाक उस को सवाब अ़त़ा फ़रमाएगा और उस को जन्नत में दाख़िल फ़रमाएगा और जो इस में ह़राम त़रीक़े से माल कमाता है और उस को ग़ैरे ह़क़ में ख़र्च करता है, **अल्लाह** पाक उस को दारुल हवान (या'नी ज़िल्लत के घर) में दाख़िल फ़रमाएगा। (شعب الایمان، 4/396، حدیث:5527) ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त "फ़ैज़ुल क़दीर" में तह़रीर फ़रमाते हैं : मा'लूम हुवा कि दुन्या फ़ी नफ़्सिही (या'नी दर अस्ल, फ़िल ह़क़ीक़त) मज़्मूम नहीं है चूंकि येह आख़िरत की खेती है, इस लिये जो शख़्स शरीअ़त की इजाज़त से दुन्या की कोई चीज़ ह़ासिल करे तो येह चीज़ आख़िरत में उस की मदद करती है। (فیض القدیر، 3/728، تحت الحدیث:4273)

ह़ुस्ने गुलशन में सरासर है फ़रेब ऐ दोस्तो ! देखना है ह़ुस्न तो देखो अ़रब के रेगज़ार

(वसाइले बख़्शिश, स. 399)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

दुन्या के तीन बेहतरीन काम

अल्लाह पाक के आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दुन्या और जो कुछ इस में है मल्ऊ़न (या'नी ला'नती) है सिवाए नेकी का हुक्म देने या बुराई से मन्अ़ करने या **अल्लाह** पाक का ज़िक्र करने के। (جامع صغیر، ص260، حدیث:4282) हज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीस के तह़्त "फ़ैज़ुल क़दीर" में तह़रीर फ़रमाते हैं : बिला शुबा येह काम (या'नी नेकी का हुक्म करना, बुराई से मन्अ़ करना और ज़िक्रुल्लाह) अगर्चे दुन्या ही में किये जाते हैं लेकिन येह दुन्यावी काम नहीं हैं बल्कि येह तो आ'माले आख़िरत हैं जो कि जन्नत की ने'मतों तक पहुंचने का वसीला हैं, लिहाज़ा हर वोह काम जिस से रिज़ाए इलाही मक़्सूद हो वोह इस ला'नत से मुस्तस्ना (या'नी अलग) है। (فیض القدیر، 3/735، تحت الحدیث:4282)

चार चीज़ों के इलावा दुन्या मल्ऊ़न है

ताजदारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : होशियार रहो, दुन्या ला'नती चीज़ है और जो कुछ दुन्या में है वोह मल्ऊ़न है सिवाए **अल्लाह** पाक के ज़िक्र और उस (चीज़) के जो रब्बे करीम के क़रीब कर दे और आ़लिम और त़ालिबे इ़ल्म के। (ترمذی، 4/144، حدیث:2329) मश्हूर मुफ़स्सिर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त फ़रमाते हैं : जो चीज़ **अल्लाह** व रसूल से ग़ाफ़िल कर दे वोह दुन्या है या जो **अल्लाह** व रसूल की नाराज़ी का सबब हो वोह दुन्या है। बाल बच्चों की परवरिश, ग़िज़ा, लिबास, घर वग़ैरा (शरीअ़त की ना फ़रमानी से बचते हुए) ह़ासिल करना सुन्नते अम्बियाए किराम है येह दुन्या नहीं। (मिरआतुल मनाजीह, 7/17)

दुन्या मच्छर के पर से भी बढ़ कर ज़लील है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! दुन्या निहायत ज़लील व ह़क़ीर है इस को अहम समझ बैठना अ़क़्ल मन्दी नहीं कि येह तो मच्छर के पर से भी बढ़ कर ज़लील है। दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** की किताब, "मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत" (561 सफ़ह़ात) सफ़ह़ा 464 ता 465 पर मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه दुन्या की मज़म्मत के मुतअ़ल्लिक़ फ़रमाते हैं : ह़दीस में है : "अगर दुन्या की क़द्र **अल्लाह** (पाक) के नज़्दीक एक मच्छर के पर के बराबर (भी) होती तो (पानी का) एक घूंट (भी) इस में से काफ़िर को न देता।" (ترمذی، 4/144، حدیث:2327) (दुन्या) ज़लील है (इसी लिये) ज़लीलों को दी गई, जब से इसे बनाया है कभी इस की त़रफ़ नज़र न फ़रमाई, दुन्या, आस्मान व ज़मीन के दरमियान फ़ज़ा में मुअ़ल्लक़ (या'नी लटकी हुई) है। फ़रियाद व ज़ारी करती (या'नी रोती धोती) है और कहती है : ऐ मेरे रब ! तू मुझ से क्यूं नाराज़ है ? मुद्दतों के बा'द इर्शाद होता है : "चुप ख़बीसा !" ﴿फिर फ़रमाया﴾ सोना चांदी ख़ुदा के दुश्मन हैं। वोह लोग जो दुन्या में सोने चांदी से महब्बत रखते हैं क़ियामत के दिन पुकारे जाएंगे कहां हैं वोह लोग जो ख़ुदा के दुश्मन से महब्बत रखते थे। **अल्लाह** पाक दुन्या को अपने महबूब (या'नी प्यारे बन्दों) से ऐसा दूर फ़रमाता है जैसे बिला तश्बीह बीमार बच्चे को उस से मुज़िर (या'नी नुक़्सान देह) चीज़ों से मां दूर रखती है। (पारह 15 **सूरए बनी इस्राईल** आयत नम्बर 11 में इर्शाद होता है)

وَيَدْعُ الْاِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَ كَانَ الْاِنْسَانُ عَجُوْلًا ﴿۱۱﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और आदमी बुराई की दुआ करता है जैसे भलाई मांगता है और आदमी बड़ा जल्द बाज़ है।

आदमी अपने मुंह से बुराई मांगता है जिस त़रह़ कि अपने लिये भलाई मांगता है, **अल्लाह** (पाक) जानता है कि (जो कुछ वोह मांग रहा है) इस में कितना ज़रर (या'नी नुक़्सान) है (लिहाज़ा) येह (बन्दा) दुआ़ मांगता है और वोह (परवर दगार बन्दे को नुक़्सान से बचाने के लिये उस की मांगी हुई शै) नहीं देता।

(फिर फ़रमाया : पारह 4 **सूरए आले इमरान** की आयत नम्बर 196 और 197 में) इर्शाद होता है :

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ﴿۱۹۶﴾ مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۚ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿۱۹۷﴾

तरजमए : तुम को धोके में न डाल दे काफ़िरों का अहले गहले शहरों में फिरना, येह थोड़ी पूंजी है फिर इन का ठिकाना जहन्नम है और बुरा ठिकाना है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 464 ता 465)

या रब ! ग़मे ह़बीब में रोना नसीब हो आंसू न राएगां हों ग़मे रोज़गार में

(वसाइले बख़्शिश, स. 407)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

ग़ैर मुस्लिमों की ख़ुशह़ाली आ़रिज़ी है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! हरगिज़ इस वस्वसे को ज़ेह्न में मत जमाइये कि हम मुसल्मान हो कर दुन्या की बहुत सारी ने'मतों से मह़रूम व बेह़ाल हैं जब कि ग़ैर मुस्लिम क़ौमें दुन्यवी त़ौर पर निहायत ख़ुशह़ाल व मालामाल हैं। यक़ीन रखिये कि मुसल्मानों के लिये जन्नत की अबदी या'नी हमेशा हमेशा रहने वाली ने'मतें हैं जब कि ग़ैर मुस्लिमों

के लिये मरने के बा'द कोई राहत नहीं और इन के लिये आख़िरत में भड़क्ती आग और जहन्नम का दाइमी या'नी हमेशगी का अ़ज़ाब है। दा'वते इस्लामी के **मक्तबतुल मदीना** के तरजमे वाले पाकीज़ा क़ुरआन, ''कन्ज़ुल ईमान मअ़ ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान'' सफ़हा 904 पर पारह 25 **सूरतुज़्ज़ुख़रुफ़** आयत नम्बर 33 ता 35 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

وَ لَوْلَاۤ اَنْ یَّكُوْنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ یَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُیُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّ مَعَارِجَ عَلَیْهَا یَظْهَرُوْنَ ﴿۳۳﴾ وَ لِبُیُوْتِهِمْ اَبْوَابًا وَّ سُرُرًا عَلَیْهَا یَتَّكِـُٔوْنَ ﴿۳۴﴾ وَ زُخْرُفًاؕ وَ اِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَاؕ وَ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِیْنَ ﴿۳۵﴾

तरजमए कन्ज़ुल ईमान : और अगर येह न होता कि सब लोग एक दीन पर हो जाएं[1] तो हम ज़रूर रह़मान के मुन्किरों के लिये चांदी की छतें और सीढ़ियां बनाते जिन पर चढ़ते और इन के घरों के लिये चांदी के दरवाज़े और चांदी के तख़्त जिन पर तकिया लगाते और त़रह़ त़रह़ की आराइश और येह जो कुछ है जीती दुन्या ही का अस्बाब है और आख़िरत तुम्हारे रब के पास परहेज़ गारों के लिये है।

कर मग़्फ़िरत मेरी तेरी रह़मत के सामने मेरे गुनाह या ख़ुदा हैं किस शुमार में

(वसाइले बख़्शिश, स. 408)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ علٰی مُحَمَّد

मुर्दा बकरी

मज़्कूरा आयाते करीमा में मुत्तक़ीन या'नी ''परहेज़ गार लोगों''

1 या'नी अगर इस का लिह़ाज़ न होता कि काफ़िरों को फ़राख़िये ऐ़श में देख कर सब लोग काफ़िर हो जाएंगे। (ख़ज़ाइनुल इ़रफ़ान)

की वज़ाहत करते हुए सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "(परहेज़ गार लोग वोह हैं) जिन्हें दुन्या की चाहत (या'नी ख़्वाहिश) नहीं।" तिरमिज़ी की ह़दीस में है कि अगर **अल्लाह** पाक के नज़्दीक दुन्या मच्छर के पर के बराबर भी क़द्र रखती तो काफ़िर को उस से एक प्यास पानी न देता। (ترمذی،4/144،حدیث:2327) दूसरी ह़दीस में है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم नियाज़ मन्दों की एक जमाअ़त के साथ तशरीफ़ ले जा रहे थे, रास्ते में एक मुर्दा बकरी देखी, फ़रमाया : देखते हो ! इस के मालिकों ने इसे बहुत बे क़द्री से फेंक दिया ! दुन्या की **अल्लाह** पाक के नज़्दीक इतनी भी क़द्र नहीं जितनी बकरी वालों के नज़्दीक इस मरी बकरी की हो। (ترمذی،4/144،حدیث:2328) **ह़दीस :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया कि जब **अल्लाह** पाक अपने किसी बन्दे पर करम फ़रमाता है तो उसे दुन्या से ऐसा बचाता है जैसा तुम अपने बीमार को पानी से बचाते हो। (ترمذی،4/4، حدیث:2044) **ह़दीस :** दुन्या मोमिन के लिये क़ैदख़ाना और काफ़िर के लिये जन्नत है। (ترمذی،4/145،حدیث:2331) (ख़ज़ाइनुल इरफ़ान, स. 904)

क्यूं करें न रश्क उस पे येह जहां के ताजदार हाथ जिस के इ़श्क़े अह़मद का ख़ज़ीना आ गया

(वसाइले बख़्शिश, स. 318)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ على مُحَمَّد

दो मछलियां पकड़ने वालों की ह़िकायत

ह़ज़रते फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه नक़्ल करते हैं : एक रिवायत में आया है कि गुज़श्ता ज़माने में एक मोमिन और एक

काफ़िर, मछली का शिकार करने निकले, काफ़िर अपने झूटे मा'बूदों का नाम ले कर ख़ूब मछलियां पकड़ता रहा और मछलियों का ढेर लग गया। मोमिन **अल्लाह** पाक का नाम ले कर जाल फेंकता रहा, लेकिन हाथ कुछ न आया। शाम को सिर्फ़ एक मछली फंसी, वोह भी तड़पी, उछली और फुदक कर पानी में जा पड़ी। मोमिन पलटा तो ख़ाली हाथ था और काफ़िर टोकरी भर कर लौटा। मोमिन पर मामूर (या'नी मुक़र्रर कर्दा) फ़िरिश्ता अफ़्सोस करने लगा, **अल्लाह** पाक ने उस फ़िरिश्ते को जन्नत में मोमिन का महल (और आ़लीशान मक़ाम) दिखाया तो वोह फ़िरिश्ता बे इख़्तियार पुकार उठा : ख़ुदा की क़सम ! इस अ़ज़ीमुश्शान महल में दाख़िले के बा'द इस मुसल्मान मछेरे को मछलियों के शिकार में नाकामी वाली मुसीबत की बिल्कुल ही परवाह न होगी और फ़िरिश्ते को जब **अल्लाह** पाक ने जहन्नम में काफ़िर का ठिकाना दिखाया तो वोह बोला : ख़ुदा की क़सम ! इस अ़ज़ाब के मक़ाम पर जब येह पहुंचेगा तो इसे (ढेर सारी मछलियां हाथ आने वाली) दुन्या की (आ़रिज़ी) ख़ुशी कोई फ़ाएदा नहीं देगी। (تنبیہ الغافلین، ص136)

ना फ़रमान को पसन्दीदा चीज़ें मिलना ख़त़रे की घन्टी है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस हिकायत से दर्स मिला कि ग़ैर मुस्लिमों की दुन्यवी तरक़्क़ियां और दौलत की फ़रावानियां (या'नी माल की कसरत) क़ाबिले रश्क नहीं, ग़रीब व तंगदस्त और दुखियारे मुसल्मानों की महशर में ईद होगी नेक मुसल्मान को अपनी ख़्वाहिश की अश्या न मिलने पर दिल बरदाश्ता नहीं होना चाहिये कि बे नमाज़ों और

गुनाहों में डूबे रहने वालों की हर दुन्यवी आरज़ू पूरी होती चली जाना भलाई की दलील नहीं, ख़त्रे की घन्टी है। जैसा कि ह़ज़रते उ़क़्बा बिन आ़मिर رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ से रिवायत है, **अल्लाह** पाक के सच्चेनबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : जब तुम देखो कि **अल्लाह** पाक दुन्या में गुनाहगार बन्दे को वोह चीज़ें दे रहा है जो उसे पसन्द हैं तो येह उस की त़रफ़ से ढील है। (مسند امام احمد، 6/122، حدیث:17313)

हुकूमत की त़लब दिल में, न ख़्वाहिश ताजे शाही की नज़र में आ़शिक़ों के बस मदीना ही समाता है

(वसाइले बख़्शिश, स. 312)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

हाथों हाथ सज़ा की ह़िक्मत

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! रब्बुल अनाम के हर काम में ह़िक्मत होती है। ग़ुरबत बल्कि हर त़रह़ की दुन्यवी तक्लीफ़ व मुसीबत पर सब्र कर के अज्र ह़ासिल करना चाहिये क्यूं कि आफ़ात व बलिय्यात (या'नी बलाएं और आफ़तें), कफ़्फ़ारए सय्यिआत (या'नी गुनाहों के कफ़्फ़ारे) और बाइ़से तरक़्क़िये दरजात होती हैं। चुनान्चे हुज़ूर सय्यिदुल मुरसलीन صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह** पाक जब किसी बन्दे से भलाई का इरादा करता है तो उस के गुनाह की सज़ा फ़ौरी त़ौर पर उसे दुन्या ही में दे देता है।" (مسند امام احمد، 5/630، حدیث:16806)

ह़ज़रते मौलना रूम رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं :

ہم خدا خواہی و ہم دُنیائے دُوں ایں خیال است و مُحال است و جُنُوں

(तू ख़ुदा को भी चाहता है और ज़लील दुन्या को भी। तेरा येह ख़याल, जुनून

या'नी पागल पन और मुहाल या'नी ना मुम्किन बात है)

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये

(वसाइले बख़्शिश, स. 289)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

मुबल्लिग़ की भी बख़्शिश हो गई

ह़ज़रते सुलैम बिन मन्सूर رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने वालिद मन्सूर बिन अ़म्मार رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه को बा'दे वफ़ात ख़्वाब में देख कर पूछा : مَا فَعَلَ اللّٰهُ بِكَ؟ या'नी **अल्लाह** पाक ने आप के साथ क्या मुआ़मला फ़रमाया ? तो उन्हों ने बताया : **मेरे रब्बे करीम** ने करम करने के बा'द मुझ से फ़रमाया : "ऐ बद अ़मल बुड्ढे ! मा'लूम है कि मैं ने तुझे क्यूं बख़्श दिया ?" मैं ने अ़र्ज़ की : नहीं ऐ मेरे मा'बूद ! तो **मेरे रब्बे करीम** ने इर्शाद फ़रमाया : तूने एक इज्तिमाअ़ में अपने रिक़्क़त अंगेज़ बयान से ह़ाज़िरीन को रुला दिया था और उस बयान में मेरा एक ऐसा बन्दा भी था जो कभी भी मेरे ख़ौफ़ से नहीं रोया था मगर तेरा बयान सुन कर वोह भी रोने लगा। तो मैं ने उस बन्दे की गिर्या व ज़ारी पर रह़्म फ़रमा कर उस को और तमाम शुरकाए इज्तिमाअ़ को बख़्श दिया इसी लिये तेरी भी मग़्फ़िरत हो गई। (شرح الصدور، ص283)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे

हिसाब मग़्फ़िरत हो । اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النّبِیّٖن صلی اللہ علیہ واٰلہٖ وسلم

मेरे अश्क बहते रहें काश हर दम तेरे ख़ौफ़ से या ख़ुदा या इलाही
तेरे ख़ौफ़ से तेरे डर से हमेशा मैं थरथर रहूं कांपता या इलाही

(वसाइले बख़्शिश, स. 78)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

जो रोता है उस का काम होता है

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस में कोई शक नहीं कि उन मुबल्लिग़ीन का दरजा बहुत ही बुलन्दो बाला और अ़ज़मत वाला है जो अपने रिक़्क़त अंगेज़ सुन्नतों भरे बयान से लोगों के दिलों में रिक़्क़त पैदा करते हैं और **अल्लाह** पाक की बारगाहे बेकस पनाह से बिछड़े हुए बन्दों को अपने पुरसोज़ बयान की कशिश से खींच खींच कर दरबारे इलाही में लाते हैं। यक़ीनन इख़्लास के साथ अच्छी अच्छी निय्यतें कर के नेकी की दा'वत की धूमें मचाने वाले सआ़दत मन्द इस्लामी भाई दोनों जहानों में काम्याब हैं। इस ह़िकायत से येह भी मा'लूम हुवा कि ख़ौफ़े ख़ुदा से जो रोता है उस का काम होता है। ख़ौफ़े ख़ुदा से रोना निहायत सआ़दत की बात है बल्कि रोने वाले की बरकत से न रोने वालों का भी बेड़ा पार हो जाता है लिहाज़ा सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में शिर्कत करने और ऐसे इज्तिमाआ़त में मांगी जाने वाली रिक़्क़त अंगेज़ दुआ़ में ह़ाज़िर रहने की बहुत बरकतें होती हैं न जाने किस रोने वाले के सदक़े सब ह़ाज़िरीन की मग़्फ़िरत के अस्बाब हो जाएं !

तड़पने फड़क्ने का दे दे सलीक़ा तेरे डर से रोने का सिखला त़रीक़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

صلی اللہ علیہ وآلہٖ وسلم

फ़रमाने आख़िरी नबी

जो अपनी दुन्या से महब्बत करता है वोह अपनी आख़िरत को नुक़्सान पहुंचाता है और जो अपनी आख़िरत से महब्बत करता है वोह अपनी दुन्या को नुक़्सान पहुंचाता है। तो फ़ना होने वाली पर बाक़ी रहने वाली को तरजीह दो। (مسند امام احمد، 7/165، حدیث: 19717)